cinemahaul

अप्रैल 2025, अंक 04, वर्ष -02

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

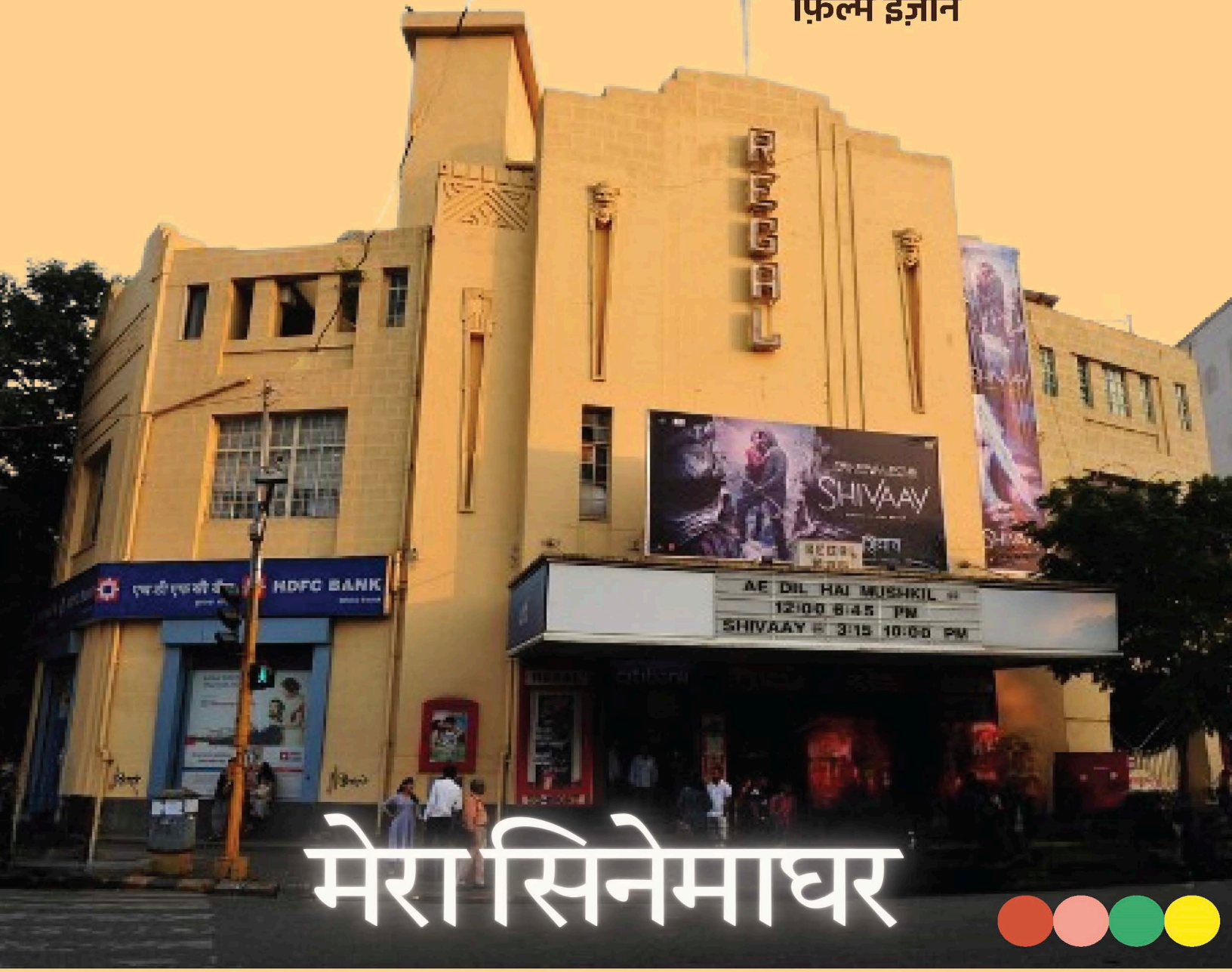

मेरा सिनेमाघर

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण: आर वर्क

हितेंद्र पटेल, सूर्यन मौर्य, सुरेश कांत, संजीव गुप्त, शावेज लतीफ, शशांक दुबे, विभा रानी, राम गौतम, रवि शेखर, यतीश कुमार, ममता सिंह, पूजा गुप्ता, पुष्पा रानी पुष्प, प्रीति प्रज्ञा प्रधान, पंकज स्वामी, डॉ रक्षा गीता, डॉ इप्सिता प्रधान, नम्रता श्रीवास्तव, निर्देश निधि, दामिनी यादव, दिलीप कुमार पाठक, सैयद एस तौहीद, चेतन कश्यप

अप्रैल 2025

वर्ष 2 अंक 4

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: मेरा सिनेमाघर

कवर : रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 5

सिनेमची नाम मिला मुझे 8

हितेंद्र पटेल

यादों के दायरे में मेरा सिनेमाघर : माजूम 18

सूर्यन मौर्य

जाना देखने फिल्म टाकीज में 27

सुरेश कांत

बचपन का वह स्वप्नलोक 40

संजीव गुप्त

बरेली का कमल सिनेमाघर 62

शावेज लतीफ़

यादों में बसा उज्जैन का नरेंद्र टॉकीज 66

शशांक दुबे

शहर में सिनेमा: सिनेमा में हम! 72

विभा रानी

मेरा सिनेमाघर 84

राम गौतम

बनारस का दीपक टॉकीज 93

रवि शेखर

सिनेमाहॉल से झाँकती स्मृतियाँ 99

यतीश कुमार

इलाहाबाद के सिंगल स्क्रीन थियेटरों की याद 108

ममता सिंह

सिनेमाघर की एक भावनात्मक यात्रा 116

पूजा गुप्ता

फिल्मों की प्रेमी मेरी बुआ 122

पुष्प कुमारी 'पुष्प'

यादों में बसा सिनेमा और सिनेमाघर 126

प्रीतिप्रज्ञा प्रधान

जबलपुर का एकमात्र सिंगल स्क्रीन शारदा सिनेमाघर 131

पंकज स्वामी

माँ से सिनेमा तक का सफर 138

डॉ. रक्षा गीता

वह मेरे पहले प्यार सा सिनेमाघर : केसरी टकिज 143

डॉ. इप्सिता प्रधान

सिनेमाघर खुला तो... 149

नम्रता श्रीवास्तव

मन की झील में खिला रह गया वह नीलकमल 152

निर्देश निधि

जादुई फिल्मी-दुनिया के द्वार पर मेरी पहली दस्तक पारस 165

दामिनी यादव

बचपन का सिंगल स्क्रीन जहाँ सपने और सिनेमा मिलते थे 175

दिलीप कुमार पाठक

पटना के सिनेमाघर 179

सैयद एस तौहीद

मेरे सिनेमाघर 186

चेतन कश्यप

मेरी बात

सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन के अप्रैल अंक का आवरण विषय है 'मेरा सिनेमाघर'। आवरण विषय के लिए लेखकों से लेख या संस्मरण लिखने का आग्रह करते समय मैंने लिखा था...

'अप्रैल अंक का आवरण विषय है 'मेरा सिनेमाघर'। हम सभी के बचपन और किशोरावस्था का एक सिनेमाघर हमारी यादों के बगीचे में मौजूद है। इसी सिनेमाघर को याद करना है। इस सिनेमाघर के साथ जुड़ी होंगी फिल्में, कलाकार, दोस्त, पड़ोसी और परिवार के लोगों की पुरकशिश यादें। इन यादों को उस समय, परिवेश और समाज के साथ लिखना है। इन यादों में वह सिंगल स्क्रीन थिएटर है, जो या तो अब जर्जर हो चुका है या विकास और आधुनिकता ने उसे जब्त कर दिया है। हम अपनी यादों में उसे आबाद कर सकते हैं।'

मुझे खुशी है कि मेरे आग्रह पर 23 लेखकों ने अपनी यादों से इस विषय को आबाद किया। उन्होंने अपने बचपन की सैर की और पाठकों के लिए उन मधुर स्मृतियों को शब्द दिए। इन स्मृतियों में फ़िल्में हैं, सिनेमाघर हैं और दोस्त-परिजन हैं। और इन सभी के साथ जिए पल हैं। इन पलों में खुशियां हैं। साथ ही हमें मिलती हैं जानकारियां उस दौर और माहौल की। कुछ लेखकों ने तो टिकट दर और सिनेमाघरों

की व्यवस्था के बारे में भी विस्तार से लिखा है। कोल्ड ड्रिंक की बोतलों पर ओपनर फिसलने से आई आवाज़ भी यादों के साथ किसी धुन की तरह बजती सुनाई पड़ती है।

अपने देश में फिल्मों का अकादेमिक अध्ययन आरंभ हो चुका है, लेकिन फिल्मों के प्रति दर्शकों की रुचि और यादों के अध्ययन के दिशा में अभी ठोस काम नहीं हुआ है। लगभग 20 साल पहले मैंने अपने ब्लॉग 'चवन्नी चैप' पर हिंदी टॉकीज के अंतर्गत यादों की सीरीज प्रकाशित की थी। यह सीरीज बाद में पुस्तक के रूप में 'सिनेमा मेरी जान' शीर्षक से प्रकाशित हुई। नॉटनल पर यह पुस्तक तीन खंडों में मौजूद है। इसका चौथा खंड इस अंक के संग्रह से आ जाएगा।

इस अंक के 23 लेखकों में 9 नए हैं। उन्होंने पहली बार सिनेमाहौल के लिए कुछ लिखा है। लेखकों में अनुभवी प्राध्यापक, साहित्यकार और पत्रकार शामिल हैं। कुछ शुद्ध फिल्मप्रेमी है। फ़िल्में उनके अंतस का हिस्सा हैं। सभी लेखकों की शुरुआत किसी कस्बे या छोटे शहर से हुई है। वहां का सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर उनकी यादों के बगीचे में आज भी खिला हुआ है। सभी ने सिनेमाघर और फ़िल्में देखने के अनुभव और यादों को तसल्ली से शेयर किया है। अगर कोई अध्येता चाहे तो इन अनुभवों के आधार पर दर्शकों की रुचियों का अकादेमिक विवेचन कर सकता है। कुछ सामान्य निष्कर्ष और पैटर्न निकले जा सकते हैं।

मेरी कोशिश रहेगी कि यह सीरीज बाद में प्रिंट में भी आए। सिंगल स्क्रीन के सिनेमाघर की खास संस्कृति रही है। शहर और परिवेश के हिसाब से लेखकों के अनुभवों में थोड़ा-बहुत अंतर मिल सकता है, लेकिन अंतिम रूप में मिला आनंद लगभग समान है। दो-तीन संस्मरणों में सिनेप्रेमियों के लिए सिनेमची शब्द का इस्तेमाल हुआ है। यह सही है, सिनेमा के नशेबाज को सिनेमची कहा जा सकता है।

हमारा अगला अंक खानत्रयी (आमिर, शाह रुख और सलमान) पर है। आप आमिर, शाह रुख या सलमान में से किसी एक पर या उनके समग्र प्रभाव पर कुछ लिखना चाहते हैं तो स्वागत है।

मैं इस अंक के सभी लेखकों का आभारी हूं। साथ ही नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा को नियमित धन्यवाद देना चाहूंगा। उनके सहयोग से ही हर अंक संभव होता है। उनकी तत्परता के सभी कायल हैं।

फ़िल्में देखें, फ़िल्में पढ़ें और फ़िल्मों पर लिखें!

अजय ब्रह्मात्मज

अप्रैल 2025

मुंबई

cinemahaul@gmail.com